वाक्य – अंग, रचना एवं प्रकार

Sem. 4, MJ-6

वाक्य को भाषा की अर्थपूर्ण इकाई माना जाता है, क्योंकि भाषा के मूल कार्य – विचार-विनिमय – इसी के द्वारा सिद्ध होते हैं। आ० विश्वनाथ ने वाक्य की परिभाषा देते हुए लिखा – "वाक्यं स्यात् योग्यताकांक्षासत्तियुक्तिः पदोच्चयः।" अर्थात् वाक्य होने के लिए पाँच तत्वों की आवश्यकता होती है – सार्थकता, योग्यता, आकांक्षा, आसत्ति (समीपता) और आन्विति (व्याकरणिक एकरूपता)। इस आधार पर वाक्य की योग्य परिभाषा यही हो सकती है कि "वाक्य भाषा की वह सहज इकाई है जिसमें एक या अधिक शब्द हों तथा जो अर्थ की दृष्टि से पूर्ण हो या अपूर्ण, व्याकरणिक दृष्टि से अपने विशिष्ट संदर्भ में अवश्य पूर्ण होती है, उसमें प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कम-से-कम एक क्रिया का भाव अवश्य होता है।

विश्व की अधिकांश भाषाओं के वाक्यों में दो अंग होते हैं – उद्देश्य (Subject) और विधेय (Predicate)। वाक्य का वह पद या पदबंध उद्देश्य होता है जिसके बारे कुछ कहा जाता है। विधेय वाक्य का वह शेष अंश है जहाँ उद्देश्य के संबंध में सूचना दी जाती है। जैसे – राम का लड़का धर गया। यहाँ 'राम का लड़का' के संबंध में सूचना है कि 'धर गया।' अतः पहला अंश उद्देश्य है और दूसरा अंश विधेय।

वाक्य-रचना में शब्दों का नहीं बल्कि पदों या पदबंधों की भूमिका होती है। व्याकरणिक आन्विति से युक्त शब्द 'पद' होते हैं तथा पदों का वह समूह जो एक व्याकरणिक इकाई बन कर वाक्य में आते हैं, पदबंध कहलाते हैं। जैसे मेरे मकान के चारों ओर पेड़ हैं। यहाँ 'मेरे मकान के चारों ओर' क्रियाविशेषण पदबंध हैं। वाक्य-रचना के लिए मुख्यतः चार बातों पर ध्यान दिया जाता है –

① पदक्रम – ग्रीक, लैटिन, अरबी, संस्कृत जैसी कुछ प्राचीन भाषाओं में तो पदक्रम का महत्व नहीं है किन्तु अधिकांश भाषाओं में ~~संस्कृत~~ कर्ता-पद, कर्म-पद, क्रिया-पद, विशेषण-पद आदि का निर्धारित क्रम होता है।

② अन्वय – विभिन्न भाषाओं में विशेषण-विशेष्य, कर्ता-क्रिया, कर्म-क्रिया आदि व्याकरणिक कोटियों में लिंग, वचन, पुरुष, काल, मूल एवं विकृत रूप आदि की अनुरूपता होती है।

③ लोप – अधिकांश भाषाओं की वाक्य-रचना में अपेक्षित शब्द या पद हर समय नहीं आते, उनका लोप भी कर दिया जाता है। ~~इसके~~

(4) आगम – वाक्य रचना में कभी-कभार अनावश्यक शब्द या पद का आगम भी कर लिया जाता है।

वाक्यों के वर्गीकरण के कई आधार हो सकते हैं, जिनके आधार पर वाक्यों के कई प्रकार हो सकते हैं। जैसे –

(1) आकृति के आधार पर – अयोगात्मक एवं योगात्मक

(2) रचना के आधार पर – सरल, संयुक्त एवं मिश्र। संयुक्त एवं मिश्र वाक्यों के अंतर्गत उपवाक्य होते हैं।

(3) भाव या अर्थ के आधार पर – विधिसूचक, निषेधसूचक, आज्ञासूचक, प्रश्नसूचक, विस्मयसूचक, संदेहसूचक, इच्छासूचक।

(4) क्रिया के आधार पर – क्रियायुक्त और क्रियाविहीन।

भाषा में वाक्य-रचना में परिवर्तन की विभिन्न दिशाएँ होती हैं। वचन, लिंग, पुरुष, लोप, आगम एवं पदक्रम में परिवर्तन के कारण कई ढंग से वाक्य-रचना की जाती है। वाक्य-रचना में परिवर्तन प्रायः अन्य भाषाओं के प्रभाव से, नवीनता के आग्रह से या वक्ता की मानसिक स्थिति में परिवर्तन होने से भी देखा जाता है।